सप्तम् अध्याय

उपसंहार

'दलित' शब्द व्यक्तिवाची से अधिक, समुदायवाची है और वह भी किसी जाति विशेष के लिए प्रयुक्त नहीं है । 'दलित' अर्थात् जिसका दलन हुआ हो, जो दबाया-कुचला गया हो, जिसके साथ अन्याय एवं अमानवीय अत्याचार किया गया हो, जिसका सोची-समझी साज़िश के तहत शोषण किया गया हो। धर्म-शास्त्र, सामजिक परंपराएँ आदि की आड़ में जिसको शारीरिक एवं मानसिक गुलाम बनाकर उनकी आत्मा को रौंदा गया हो, उन सभी को हम दलित मानते हैं । इतिहास गवाह है की प्राचीन काल से इस प्रकार का शोषण और दलन शूद्र और पिछड़ी जातियों का हुआ है ।

साहित्य समाज का दर्पण होता है । अतः समाज की ऐसी घोर विडंबना का प्रतिबिंबन साहित्य में होना तो स्वाभाविक ही था । परिणामस्वरूप आदिकाल के सिद्ध और नाथ साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य में दलित चेतना के दर्शन होते रहे हैं । दलित साहित्य, दलित विमर्श, दलित साहित्यकार आदि विभावनाएँ भारतीय इतिहास के आधुनिक काल की देन है । आधुनिक काल में दलित अपने मानव अधिकारों के लिए सतर्क एवं सुसज्ज है तथा अन्याय व अत्याचारों के सामने सीना तान के संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है । इस दृष्टि से यह तथा कथित कलियुग दलित पीड़ित, शोषित जातियों के लिए तो स्वर्णयुग ही है, क्योंकि इस युग में विश्वमानवता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं ।

हिन्दी साहित्य जगत में दलित कविता का प्रादुर्भाव इसी विश्वमानवता की आकांक्षा लिए हुआ है । दलित कविता दलितों पर थोपे गए अनेकानेक बंधनों से मुक्ति की छटपटाहट है और नए मानवीय एवं समतामूलक समाज के निर्माण की आधारशीला है । दलित कविता के केन्द्र में भारतीय समाज का सबसे नीचे की सीढ़ी पर रहा महेनतकश,सर्वहारा, अधिसंख्य मानव है। दलित कविता इसी सर्वहारा

मानव की व्यथा, वेदना, संताप, संघर्ष के द्वारा भारतीय समाज की घोर विषमता को प्रस्तुत करती है । किन्तु दुःखद सत्य तो यह है कि हिन्दी साहित्य के विवेचन एवं शोध की परिधि में दलित साहित्य बहुत अंशों तक अछूता ही रह गया है । समाज का यह दर्पण समाज के मात्र एक पहलू को प्रदर्शित करता रहा है और बहु संख्यक दलित मानव का दुःख-दर्द, जीवन-मरण, तृष्णा-वितृष्णा का प्रतिबिंबन करने में असफल रहा है, अतः यह दर्पण कालिख पुता शीशा मात्र बनकर रह गया है, पारदर्शी सच का दर्पण नहीं । मेरा मानना है कि साहित्य-जगत को किसी भी प्रकार के साहित्य के साथ ऐसी अस्पृश्यता शोभा नहीं देती । अपने शोध प्रबंध के लिए दलित कविता को चुनने के कारणों में एक प्रमुख कारण यह भी रहा है कि दलित कविता में निहित साहित्यिकता एवं सामाजिकता को वाचा देना एवं विवेचन व शोध के अनुसंधान भवन में दलित कविता को स्थान दिलाना । कथा साहित्य को लेकर काफ़ी शोधकार्य हो चूका है, अतः मेरे निर्देशक डॉ॰ एन॰ एस॰ परमार साहब के परामर्श के अनुसार मैंने समकालीन दलित कविता का अध्ययन व विवेचन करने का यथामति प्रयास किया है ।

दलित कविता अपने उदभव में नई नहीं है । दलित काव्य परंपरा के उत्स हमें आदिकाल के सिध्ध एवं नाथ कवियों की रचनाओं में प्राप्त होते हैं। बाद में मध्यकालीन संत कवियों ने अपनी रचनाओं में इस परंपरा को परिपोषित किया । उन्होंने ईश्वर के सगुण-साकार स्वरुप को नकारते हुए धार्मिक आडंबरों का विरोध किया और सब मानव को 'मानव' माना । उस समय में ऐसा आध्यात्मिक विद्रोह बहुत बड़ी बात थी । संत कवियों ने वर्ण-व्यवस्था को नकारते हुए कर्म-व्यवस्था या गुण-व्यवस्था का पक्ष लिया । भारतीय इतिहास में शायद पहली बार ऐसा विद्रोह हुआ जो मूर्तिपूजा एवं वर्णवाद को नकारता हो । यह परंपरा आगे चलकर आधुनिक काल में अपने पूरे सौंदर्य के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है । आधुनिक काल के दलित साहित्यकारों की रचनाओं में इस परंपरा की प्रखरता एवं प्रबुध्धता स्पष्ट रुप से दृष्टिगत होती है । आधुनिक काल में अनेक दलित साहित्यकार अपनी रचनाओं के

द्वारा इस परंपरा को और पृष्ट कर रहे हैं । अनेक कवि अनेकानेक कविताओं का सर्जन कर चूके हैं और कर रहे हैं। यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो दलित कविता का अध्ययन एक विस्तृत एवं बृहद कार्य बन जाता है। अतः मैंने अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए और अपने अध्ययन को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए दलित साहित्य के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं को अपने शोध प्रबंध का आधार बनाया है।

अपने अध्ययन की मर्यादा में रहते हुए मैंने डॉ॰ ओमप्रकाश वाल्मीकि, डॉ॰ जयप्रकाश 'कर्दम', डॉ॰ श्यौराजसिंह 'बेचैन', डॉ॰ मोहनदास नैमिशराय, डॉ॰ कुसुम 'वियोगी', डॉ॰ कंवल भारती, मलखान सिंह, डॉ॰ पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, डॉ॰ सुशीला टाकभौरे, डॉ॰ सोहनपाल सुमनाक्षर, डॉ॰ सुखबीरसिंह, मंशाराम विद्रोही, डॉ॰ धर्मवीर, डॉ॰ श्यामसिंह शशि, डॉ॰ एन॰ सिंह, डॉ॰ कर्मशील भारती, डॉ॰ अशोक भारती, डॉ॰ सी.बी. भारती, डॉ॰ असंग घोष, दयानंद बटोही, डॉ॰ रजनी तिलक, डॉ॰ नवेन्दु महर्षि आदि का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनके रचनाकर्म को प्रस्तुत किया है ।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है । इन सातों अध्यायों के द्वारा दलित कविता के उदगम से लेकर आधुनिक कविता के स्वरुप, उसकी सामाजिकता, उसकी भाषाभिव्यंजना एवं उसकी साहित्यिक उपादेयता को निरुपित करने का प्रयास किया गया है ।

शोध-प्रबंध के सातों अध्याय क्रमशः इस प्रकार हैं -

<u>प्रथम अध्याय : विषय प्रवेश है</u> ।

इस अध्याय में शोध-प्रबंध की पूर्वभूमिका स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । हमारे शोध प्रबंध का विषय दलित साहित्य की परंपरा और समकालीन दलित कविता से सम्बद्ध है, अतः इस अध्याय में हमने एतद विषयक कतिपय मुद्दों का आकलन करने का प्रयास किया है । अध्याय के आरंभ में 'दलित' शब्द की विविध अवधारणाओं को स्पष्ट किया गया है । 'दलित' शब्द जब 'साहित्य' से जुड़ जाता है

तो एक अलग एवं विशिष्ट साहित्य को सूचित करता है । यहाँ इस 'विशिष्ट' साहित्य को परिभाषित किया गया है । दलित साहित्य अपनी अलग विशेषताओं को लिए हुए है, अतः उसकी सौंदर्य परीक्षा भी अलग प्रकार की ही होनी चाहिए ऐसा मानते हुए इस अध्याय में दलित साहित्य के प्रादुर्भाव को स्पष्ट करते हुए दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र की भी समुचित चर्चा की गई है । साहित्य जगत में दलित साहित्य के रचनाकार संबंधी विवाद तो आज भी अपना स्थान बनाए हुए है। दलित साहित्य का सृजन केवल दलित साहित्यकार ही कर सकता है या गैर दलित रचनाकार भी दलित साहित्य की सृष्टि का निर्माता हो सकता है ? इस विषय पर अनेक विद्वानों में मतमतांतर पाये जाते हैं । गौरतलब है कि दलित साहित्य कला के लिए नहीं है, अपितु जीवन के लिए है, अतः दलित चेतना का यथोचित निर्वाह करनेवाला साहित्य ही दलित साहित्य कहलाएगा । इस अध्याय में दलित साहित्य के रचनाकार संबंधी विविध मतों का आकलन किया गया है । नवजागरण काल के परिणाम स्वरुप समाजसुधारकों एवं नेताओं के द्वारा दलितोत्थान के प्रयास किये गए हैं जिनमे से मुख्य रूप से डॉ. बाबा साहब आंबेडकर, महत्मागांधी तथा ज्योतिराव फूले के प्रयासों का आकलन करने का प्रयास इस अध्याय में रहा है । साथ में आज के समय में दलितोद्धार के प्रयासों की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट किया गया है । हमारा शोध प्रबंध समकालीन दलित साहित्य से संबंद्ध होने के कारण इस अध्याय में दलित साहित्य के आधुनिक स्वरुप का विवेचन भी किया गया है। हिन्दी साहित्य के साथ दलित साहित्य की विशेषताओं की तुलना करने का विनम्र प्रयास करके दोनों साहित्य के स्वरूपों को स्पष्ट करने का उपक्रम रहा है। आनेवाले समय में दलित साहित्य के स्वरुप, उसकी चुनौतियों की भी सप्रमाण चर्चा इस अध्याय में की गई है।

<u>प्रस्तुत शोध प्रबंध का द्वितीय अध्याय है - "दलितों पर थोपी गई निर्योग्यताएँ"</u>

इस अध्याय में धर्म शास्त्रों की आड़ में दलितों पर लादे गए अनेकानेक नियंत्रणों की विस्तृत चर्चा की गयी है । दलित साहित्य के अध्ययन के लिए इन निर्योग्यताओं की चर्चा महत्वपूर्ण बन जाती है, क्योंकि दलित साहित्य के मूल में

इन्ही निर्योग्यताओं से उत्पन्न संताप-विताप, वेदना-पीड़ा और असंतोष रहा है । दलित साहित्य में जो प्रखरता एवं विद्रोह का स्वर मिलता है उसका मूल कारण यही निर्योग्यताएँ रही हैं । प्राचीन काल से ही दलितों पर नाना प्रकार की निर्योग्यताएँ थोपी गई जिससे उसका जीवन पशुवत हो गया और वह मानव होकर भी मानव-समाज से शारीरिक एवं मानसिक रूप से योजनों दूर रहा और जानवरों जैसा जीवन व्यतित करने के लिए बाध्य बन गया । इन संतापों ने ही उसके मन में क्रोध, असंतोष एवं मुक्ति की छटपटाहट को जन्म दिया जो दलित साहित्य के रूप में विस्फोटित हुई । द्वितीय अध्याय में हमने इन निर्योग्यताओं की विशेष एवं विस्तृत चर्चा की है । हमने यहाँ दलितों पर थोपी गई अस्पृश्यता, धार्मिक निर्योग्यताएँ, धार्मिक अस्पृश्यता, सामाजिक निर्योग्यताएँ, शैक्षिक निर्योग्यताएँ, आर्थिक निर्योग्यताएँ आदि की विस्तृत चर्चा की है और इन निर्योग्यताओं को ढाल बनाकर दलितों की प्रताड़ना एवं उनके शोषण के प्रमाण भी प्रस्तुत किये हैं । दलित साहित्य की तेज धार एवं उसकी लगनेवाली बातों को समझने हेतु इन निर्योग्यताओं का आकलन इस अध्याय में किया गया है ।

<u>तृतीय अध्याय है – "दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और परंपरा"</u>

इस अध्याय में हमने दलित साहित्य की पृष्ठभूमि और परंपरा को निरुपित किया है । प्राचीन काल के वाल्मीकि और 'रामायण' तथा व्यास और 'महाभारत' से लेकर आधुनिक काल के माताप्रसाद तक के कवियों की रचनाओं का आकलन किया गया है, वाल्मीकि एवं व्यास की रचनाएँ रामायण एवं महाभारत की चर्चा के बाद सिध्ध एवं नाथ साहित्य की विशेषताओं की सोदाहरण चर्चा इस अध्याय में की गई है, क्योंकि इन्ही रचनाओं में दलित साहित्य का उत्स पाया जाता है । सिध्ध एवं नाथों की काव्य प्रवृत्तियाँ समाज में स्थापित वर्ण-व्यवस्था एवं जात-पाँत विरोधी है। आगे चलकर भक्ति काल के निर्गुणिया संत कवियों ने भी समाज की ऐसी कुपरम्पराओं पर आघात किये हैं । अतः इस अध्याय में भक्तिकाल के कुछ संत

कवियों की रचनाओं को सोदाहरण प्रस्तुत करके दलित काव्य परंपरा को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । इस अध्याय में कबीरदास, रैदास, गुरुनानक, धर्मदास, दादू दयाल, नरसिंह मेहता, संत पीपाजी, सुन्दरदास जैसे संत कवियों की रचनाओं का आकलन किया गया है । इन कवियों का काव्य क्रान्तदर्शी रहा है । आगे चलकर नवजागरणकालीन कवियों की रचनाओं में दलित काव्य परंपरा और पुष्ट होती नजर आती है । हीराडोम, स्वामी अछूतानंद की रचनाएँ इसी बात का प्रमाण है, अतः इन कवियों के रचनाकर्म का भी यथामति विवेचन करने का प्रयास किया गया है । आधुनिक काल के कवि माताप्रसाद की रचनाओं के आकलन के द्वारा दलित काव्य परंपरा के आधुनिक स्वरुप को स्पष्ट किया गया है । दलित काव्य की इस अध्ययन यात्रा से दलित कविता के उदगम, उसके पालन-पोषण एवं आधुनिक समय में उसका उर्जस्वित युवा स्वरुप हमारे सामने स्पष्ट होता है, साथ ही साथ यह भी सिध्ध होता है कि दलित कविता के बीज प्राचीन वैदिक साहित्य से ही अंकुरित हो चूके थे जो आधुनिक समय में अपने पूर्ण प्रभाव के साथ पुष्पित, पल्लवित एवं फलित हो रहे हैं । आधुनिक दलित कविता साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है ।

<u>शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय है – “समकालीन दलित कवियों की कविता”</u>

इस अध्याय में हमने समकालीन दलित हस्ताक्षरों एवं उनके कृतित्व को मूल्यांकित करने का यत्न किया है । हमारा अध्ययन समकालीन दलित कविता से संबधित है और विभिन्न संदर्भों में ‘समकालीन’ शब्द के अलग-अलग अर्थनिष्पन्न होते हैं, इसिलिए इस अध्याय के आरंभ में हमने ‘समकालीन’ से क्या तात्पर्य है, उसे स्पष्ट किया है । हिन्दी आलोचना में सन १९८० या १९८५ के बाद के हिन्दी साहित्य को ‘समकालीन’ कहा गया है । ‘समकालीन साहित्य’ को केवल इस काल बोध से अधिक उस साहित्य के सरोकारों से पहचाना जाता है । जिस साहित्य में समकालीन-चेतना विद्यमान हो वही समकालीन साहित्य की श्रेणी में आता है । हमने अपने शोध प्रबंध में समकालीन दलित कवियों की रचनाओं को आधार बनाया है । इस अध्याय में

हमने हमारे शोध प्रबंध के आधारभूत कवियों की रचनाओं का आकलन एवं विवेचन करने का प्रयास किया है । दलित कविता एक असीम समंदर है, जहाँ अनेक कवि अपनी अनेक रचनाओं से दलित काव्य साहित्य को समृध्ध कर रहे हैं । अतः अध्ययन की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए हमने कुछ समकालीन दलित कवियों की कविता को रेखांकित करने का प्रयास किया है । अपने अध्ययन की परिधि में रहते हुए मैंने डॉ॰ ओमप्रकाश वाल्मीकि, डॉ॰ जयप्रकाश 'कर्दम', डॉ॰ श्यौराजसिंह 'बेचैन', डॉ॰ मोहनदास नैमिशराय, डॉ॰ कुसुम 'वियोगी', डॉ॰ कंवल भारती, मलखान सिंह, डॉ॰ पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, डॉ॰ सुशीला टाकभौंरे, डॉ॰ सोहनपाल सुमनाक्षर, डॉ॰ सुखबीरसिंह, मंशाराम विद्रोही, डॉ॰ धर्मवीर, डॉ॰ श्यामसिंह शशि, डॉ॰ एन॰ सिंह, डॉ॰ कर्मशील भारती, डॉ॰ अशोक भारती, डॉ॰ सी.बी. भारती, डॉ॰ असंग घोष, दयानंद बटोही, डॉ॰ रजनी तिलक, डॉ॰ नवेन्दु महर्षि आदि का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनके रचनाकर्म को प्रस्तुत किया है । दलित कवियों की कविता उनके संताप-विताप की व्यथा-कथा होने के साथ-साथ मुक्ति की तड़पन एवं आक्रोश पूर्ण विद्रोह को अपने में समाए होती हैं । हमने यहाँ प्रत्येक कवि के काव्यकर्म की विशेषताओं का विश्लेषण करने का यत्न किया है । इन कवियों की कविताओं के द्वारा दलित काव्य का आधुनिक समृध्ध स्वरुप हमारे सामने आता है । वह केवल अपनी प्रखरता एवं प्रबुध्धता का प्रमाण ही नहीं देता बल्कि दलित कविता की भविष्यत् संभावनाओं को भी हमारे सामने रखता है । इन रचनाओं से दलित कविता का आज और कल स्पष्टरूप से दृष्टिगत होता है ।

<u>पंचम् अध्याय है - " समकालीन दलित कविता में निरुपित विभिन्न समस्याओं का अनुशीलन ।"</u>

यह तो एक सर्वविदित तथ्य है की प्राचीन समय से भारत में धर्म-शास्त्र एवं परंपराओं की आड़ में दलित जातियों का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं नैतिक शोषण हुआ है । इन बंधनों एवं शोषण के परिणाम स्वरुप उनका जीवन भयंकर दरिद्रता एवं संतापों में व्यतीत हुआ है । उनका जीवन ही समस्याओं का पर्याय बन

चूका है। दलित कविता ने दलित जीवन की इस त्रासदायिनी विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण किया है । अतः प्रस्तुत अध्याय में हमने आलोच्य कवियों की रचनाओं के आधार पर दलित जीवन की विविध समस्याओं का आकलन करने का प्रयास किया है। इस अध्याय में हमने दलितों की सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत अस्पृश्यता की समस्या, दलितों के अपमान एवं उन पर होनेवाले अत्याचारों की समस्या दलित नारियों के शोषण की समस्या को सोदाहरण प्रस्तुत किया है । दलित कविता इन्हीं समस्याओं का प्रतिबिंबन है। इसके उपरांत दलित जीवन की धार्मिक समस्या गरीबी की समस्या, शैक्षणिक समस्याएँ एवं राजनैतिक तथा नैतिक समस्याओं का यथामति विवेचन किया गया है । दलित कविता के इस समस्यामूलक अध्ययन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि दलित कविता का दबंगीपन सिर्फ सवर्ण साहित्य को गालियाँ देने में नहीं है, और न ही उसका यह उद्देश्य भी है, लेकिन उसकी सार्थकता समाज में व्याप्त विभिन्न विषमताओं का यथास्थिति वर्णन करना है और भारतीय समाज को उसके चहेरे पर लगे दाग-धब्बों से परिचित करवाना ही है । दलित कवि इन समस्याओं के भुक्तभोगी रहे हैं, अतः उनकी रचनाओं में भारतीय समाज एवं हिन्दू धर्म का नंगा सच प्रस्तुत हुआ है। क्योंकि यह समस्याएँ ही दलित कविता का चालक बल बन रही है, उसका अध्ययन दलित कविता की परंपरा के अनुशीलन हेतु अनिवार्य बन जाता है। दलित कविता का वर्ण्य-विषय यही संताप रहे हैं , जो उसे और सामाजिक बनाए हुए हैं। समकालीन दलित कवियों की रचनाएँ दलित जीवन की त्रासदियों के खुले दस्तावेज बन पड़ी है । दलितों पर थोपी गईं अनेकानेक निर्योग्यताओं ने दलित जीवन को नरक बना दिया है और इसलिए उनके जीवन की समस्याओं के उत्स इन्ही बंधनों में पाये जाते हैं। साथ ही साथ दलितों की अशिक्षा, असंगठितता एवं लघुताग्रंथि भी कहीं न कहीं इन समस्याओं का पूरक तत्व बनी हुई है। हम कह सकते हैं कि समकालीन दलित कवियों की कविताएँ हमें दलित जीवन के नारकीय यथार्थों से रुबरु करवाती हैं।

<u>शोध-प्रबंध का षष्ठ एवं महत्वपूर्ण अध्याय है – "समकालीन दलित कविता शिल्प एवं नवीन भाषाभिव्यंजना।"</u>

दलित साहित्य को गटर साहित्य कहकर उस पर सपाटबयानी एवं केवल आक्रोश, विद्रोह और संतापों का साहित्य होने के अनेकानेक आरोप लगाये जाते हैं। उसमें अभिव्यक्ति की गहराई नहीं है, यह साहित्य काव्यशास्त्रीय एवं सौंदर्यशास्त्रीय मानदण्डों पर इतना खरा नहीं उतरता आदि अनेकानेक भ्रमणाओं को फ़ैलाने की एक परंपरा बन पड़ी है। इस प्रकार दलितों के इस उभरते साहित्य को अनेक प्रकार के आरोपों एवं विवादों के कटघरे में खड़ा कर उसे अवरुध्ध करने के प्राणान्तक प्रयास किये जा रहे हैं। वास्तव में इन सारे आरोपों एवं विवादों में कोई तथ्य नहीं है। वस्तुतः यह सारे प्रयास दलित साहित्य को 'अस्पृश्य' बनाए रखने की 'बौद्धिक' साजिश मात्र प्रतीत होते हैं। क्योंकि दलित रचनाओं में भी अलंकार, विशेषण-विपर्यय, नए रूपक, नवीन मुहावरे, नये ताजा प्रतीकों एवं बिंबो का प्रयोग हमें विपुल प्रमाण में मिलता है। हमारा विषय दलित कविता से संबंधित है, जिस पर काव्यशास्त्रीय असौन्दर्यात्मकता के आरोप लगाए जाते हैं। अतः इस अध्याय में हमने आलोच्य कवियों की रचनाओं के साक्ष्य पर दलित कविता पर लगे आरोपों का सप्रमाण खंडन करने का विनम्र प्रयास किया है। इस अध्याय में हमने दलित कविता की विशिष्ट भाषाभिव्यंजना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। समकालीन दलित कविता के काव्यसौंदर्य मूलक अध्ययन में हमने दलित कविता के शिल्प विधान की विस्तृत चर्चा की है।

दलित कविता के सौंदर्यात्मक अध्ययन को तीन आधारों पर वर्गीकृत किया गया है।

(१) दलित कविता की भाषा

(२) दलित कविता के भाषिक तत्व एवं

(३) दलित कविता की सामाजिक प्रतिबध्धता।

दलित कविता की भाषा विशिष्ट है, क्योंकि उसका कथ्य भी पारंपरिक नहीं बल्कि विशिष्ट है। दलित कविता की इस विशिष्ट भाषा के विवेचन के अंतर्गत हमने दलित साहित्य के रचनाकार संबंधी विवाद की चर्चा भी की है, क्योंकि भाषा रचनाकार पर ही निर्भर करती है। दलित रचनाकार दलित जीवन की यातनाओं का भोगी रहा है, अतः उसकी भाषा रमणीय शब्दावली का क्लिष्ट जाल तो नहीं ही हो सकती है, उसका आक्रोश एवं विद्रोह उसकी भाषा के प्रमुख घटक हैं। दलित कविता की भाषा पर सपाटबयानी एवं गद्यात्मकता का आरोप भी लगाया जाता है। यहाँ इस आरोप के कारणों की चर्चा करते हुए दलित कविता के सामाजिक परिवेश को स्पष्ट करके इस आरोप का उत्तर दिया गया है। दलित कविता में वर्ण्य विषय के पुरावर्तन संबंधी आरोप, भाषा में अश्लीलता का आरोप आदि आरोपों की चर्चा करते हुए इन आरोपों की अतार्किकता एवं तथ्य विहीनता को सप्रमाण स्पष्ट किया गया है।

दलित काव्यभाषा के अध्ययन के अगले सोपान 'भाषिक तत्व' के अंतर्गत समकालीन दलित कविता का पूर्ण रूप से काव्यसौन्दर्यात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें दलित काव्यभाषा का वैज्ञानिक आकलन करते हुए दलित कविता में व्याप्त प्रतीकों, बिम्बों की समुचित चर्चा की गई है। दलित कविता ने अपने कथ्यानुसार नये ताजा मिथकों का मानवीय रूपांतर किया है। यहाँ दलित कविता में व्याप्त कतिपय अलंकारों की खोज भी की गई है, इसके द्वारा दलित कविता में काव्यशास्त्रीय मानदण्डों की उपस्थिति को सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है और इसके द्वारा दलित कविता पर लगे आरोपों का खंडन करने का प्रयत्न किया है। दलित कविता के शिल्प-विधान के अंतर्गत आगे दलित कविता की शब्द चमत्कृति, कविता के द्वारा समाज को प्रश्न पूछने की वृत्ति का वर्णन किया गया है। दलित कविता सिर्फ अपने दु:खों का रोना-धोना एवं गालियाँ देना ही नहीं है, अपितु उसमें सामाजिक एवं राष्ट्रीय सरोकारों के प्रति निष्ठा भी है, यह सिध्ध करने हेतु दलित कविता की राष्ट्र चेतना तथा उसकी सामाजिक एवं वैचारिक प्रतिबध्धताका सप्रमाण आकलन भी इस अध्याय में किया गया है। कुल मिलाकर दलित कविता पर लगे सारे आरोपों को

प्रमाणों के साक्ष्य पर नेस्तोनाबूद करने का प्रयास इस अध्याय में किया है । दलित कविता की अपनी भाषाभिव्यंजना है ; अपना सौंदर्य है, अपने सरोकार हैं । और इस दृष्टि से दलित कविता किसी भी अन्य कविता से लेशमात्र भी कमज़ोर नहीं है, यह इस अध्याय से सिध्ध होता है ।

सप्तम अध्याय 'उपसंहार' है, जो कि प्रस्तुत अध्याय है । इस अध्याय में हमने संपूर्ण शोध प्रबंध के निचोड़ एवं तारतम्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । यहाँ प्रत्येक अध्याय में अनुसंधान एवं विवेचन के किये गए प्रयासों को क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है । प्रत्येक अध्याय के सारांश को यहाँ प्रस्तुत किया है और इस प्रकार इस अध्याय को मेरी शोध-प्रक्रिया का यात्रा वर्णन कहना ही उचित होगा । इस यात्रा वर्णन में मेरे सफ़र के हर लम्हे का समावेश करने का यत्न रहा है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध दलित साहित्य की मेरी अध्ययन आकांक्षा का प्रथम एवं प्राथमिक सोपान बिंदु है । वस्तुतः मेरे विश्वविद्यालयीन अध्ययन के दौरान जब मैंने 'धरती धन न अपना' जैसे उपन्यास पढ़े, तब दलितों की दुर्दशा एवं दलित साहित्य विमर्श जैसे सरोकारों से रुबरु होने का अवसर मिला था । तभी से दलित साहित्य के क्षेत्र में कुछ और झांकने की मेरी इच्छा बलवती होती गई थी और तभी से मैंने निश्चय किया था यदि अवसर मिला तो मेरा शोधकार्य दलित साहित्य से संबंधित ही होगा। अतः इस शोध कार्य को मैं अपनी इसी इच्छा शक्ति का प्रतिफलन मानता हूँ।

दलित कविता साहित्य की मेरी इस अध्ययन यात्रा के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि दलित साहित्य एवं दलित कविता के ऊपर लगाये गए सारे आरोप तथ्य विहीन है । दलित कविता का अपना नया एवं विशेष स्वरुप है और उस रूप में उसे स्वीकार किया जाना चाहिए। दलित कविता के लिए पारंपरिक सौंदर्यमूलक मापदण्डों की अपेक्षा उसकी सफलता, सार्थकता, सूचकता एवं सामाजिकता के आधार पर उसका मूल्यांकन होना चाहिए, बल्कि हमने तो दलित कविता में विद्यमान कुछ पारंपरिक सौंदर्य मूलक तत्वों को भी उभारने की चेष्टा की है, प्रस्तुत अध्ययन एवं विवेचन कार्य के बाद यह तथ्य भी उभरकर सामने आता है कि दलित

काव्य परंपरा तो प्राचीन काल से ही चली आ रही है, लेकिन आधुनिक समकालीन दलित कविता प्राचीन दलित कविताओं की तुलना में अधिक सार्थक एवं विशिष्ट भाषाभिव्यंजना लिए हुए है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक आते-आते दलित काव्य परंपरा और प्रखर एवं और प्रबुध्ध होती गई है। आधुनिक दलित कविता के आधार पर हम इस काल को दलित कविता का स्वर्णयुग भी कह सकते हैं।

समकालीन दलित कविता में दलित चेतना के साथ-साथ सामाजिक-चेतना एवं राष्ट्र चेतना के स्वर भी उतने ही मुखर अभिव्यक्ति पाते हैं । दलित कविता की अध्ययनयात्रा के दौरान मैंने दलित कविता की कुछ विशेषताओं का आकलन किया है, जैसे -

1. दलित कविता निर्भीक रूप से समाज की यथास्थिति का चित्रण करती है, और इसिलिए उसका स्वर कटु लगता है ।
2. दलित कविता का उद्देश्य समतामूलक समाज निर्माण है, वह कर्म एवं गुण की पूजा करती है ।
3. दलित कविता की भाषा में कृत्रिमता नहीं है, सहजता है ।
4. दलित कविता का नायक दलित, पीड़ित शोषित व्यक्ति रहा है, चाहे यह किसी भी वर्ण का हो ।
5. दलित कवि पारंपारिक काव्य सौंदर्य की चिंता नहीं करते, अपनी अभिव्यक्ति एवं प्रहार के लिए सचेत दिखाई पड़ते हैं ।
6. दलित कवि अपने साहित्यिक मापदण्डों की तलाश खुद ही करते हैं ।

दलित कविता के आधुनिक स्वरुप को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि उसका आनेवाला कल बहुत ही सुनहरा है । दलित कविता अपने सौंदर्य एवं शिल्प में लगातार वुद्धि करती नज़र आती है, अतः उसका भविष्यतकाल निश्चित रूप से अत्यंत तेजस्वी होगा । मेरे अनुसार दलित कविता को उसका उच्चतम स्वरूप देने के लिए दलित साहित्यकारों को निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी होंगी –

1. दलित कविता को अपने चरम पर पहुँचाने के लिए दलित रचनाकारों को भी सतर्क एवं सुसज्ज बनना पड़ेगा ।
2. दलित कवियों को अपनी कविताओं में विषय-वैविध्य लाना होगा एवं अपनी रचनाओं को साहित्यिक आडंबरों से बचाए रखना होगा ।
3. दलित कवियों को अपने आपको ईर्ष्या एवं अहम् से मुक्त रखकर दलित कविता को समृध्ध करने का प्रयास करना होगा और अपने विस्तृत एवं गहन अध्ययन के द्वारा अपनी कलम को कसना होगा ।
4. दलित कवियों को प्रदर्शन वृत्ति से मुक्त रहकर अपने साहित्यिक उद्देश्यों की ओर निरंतर अग्रसर होते रहना होगा ।
5. दलित साहित्य के कवियों को अपने हित-शत्रु और हित-मित्रों की स्पष्ट पहचान करनी होगी ।

हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि आनेवाले समय में दलित कविता अपने चरम को प्राप्त करेगी एवं उससे संबंधित सारी भ्रमणाओं को निरस्त्र करेगी ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मैंने समकालीन दलित कवियों की रचनाओं को अपने अनुसंधान का लक्ष्य बनाया है । आधुनिक काल में ऐसे अनेक दलित रचनाकार अपनी रचनाओं से दलित साहित्य को समृद्ध कर रहें है अतः उनकी रचनाओं के अध्ययन के द्वारा दलित कविता के शिल्प-विधान की परिवर्तनशीलता का अध्ययन किया जा सकता है और इसके द्वारा दलित कविता की दशा और दिशा पर विचार विमर्श किया जा सकता है । यह दलित साहित्य के क्षेत्र में अनुसंधान एवं शोध का नया गवाक्ष हो सकता है । यह सुखद तथ्य है कि आज दलित साहित्य के विषय में अनेक शोध कार्य हो रहे हैं, और भविष्य में होते रहेंगे । इन शोधकार्यों के फल स्वरुप दलित साहित्य और समृध्ध और प्रखर एवं और प्रबुध्ध बनता रहेगा ।

अन्त में मेरा विनम्र निवेदन है कि मेरी शक्ति-मति बुध्धि की भी अपनी सीमाएँ हैं । अनुशीलन एवं अध्ययन के क्षेत्र में मेरा यह शोध कार्य तो प्रस्थान बिंदु के मानिंद है, आगे चलकर इस यात्रा में कुछ और अग्रसर होने की कामना लिए ईश्वर

से यही प्रार्थना है कि इस दिशा में वह मेरा पथ आलोकित करता रहे। अनुसंधान एवं शोध के क्षेत्र में रखा हुआ मेरा यह छोटा सा कदम मेरे अनुवर्ती अनुसंधित्सुओं को यदि किंचित मात्र भी सहायक सिध्ध हो पाया, तो मैं स्वयं को कृतकृत्य समझूँगा।